Nahnidatta or Lahnidatta was a great scholar of astrology from Mithila. He flourished in early 14th century. His only work Nahnidatta-panchvimshatika became very famous in all over Northern India as its many manuscripts found in Rajasthan, Gujarat, U.P. and other places. This book containing 25 verses deals with the auspicious dates and *Muhurtas* (time) for various Hindu ceremonies like Upanayan, Vivaha (marriage ceremony) &etc. Its commentary by M.M. Ruchipati (15th century) of Khauala-family from Mithila is being published here for the first time from its manuscript by Bhavanath Jha. Ebook generated by the present editor on May 9, 2014

नाह्निदत्त-पञ्चविंशतिका

रुचिपतिकृत टीका सहित

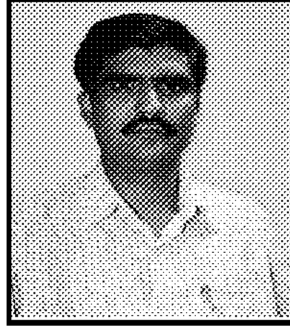
पं. भवनाथ झा

एम. ए. (संस्कृत), साहित्याचार्य

प्रकाशन एवं शोध प्रभारी

महावीर मन्दिर, पटना

परिचय



नाम – पं. भवनाथ झा

पितृनाम – पं. अमरनाथ झा

जन्मस्थान – हटाढ़ रुपौली, झंझारपुर, मधुबनी (बिहार)

जन्मतिथि – 23 सितम्बर, 1968 ई.

शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत), साहित्याचार्य

प्रकाशित रचना – **बुद्धचरितम्** (अश्वघोष कृत महाकाव्य के अनुपलब्ध अंश का संस्कृत भाषा में काव्यमय अनुवाद), महावीर मन्दिर प्रकाशन से 2013 में प्रकाशित।

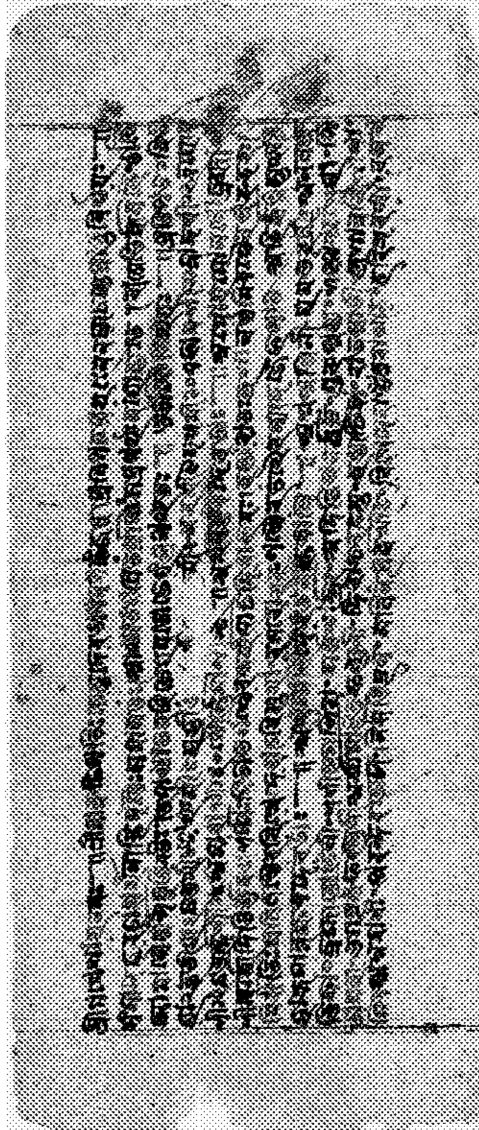
मातृभाषा मैथिली में दर्जनों कथाओं का विभिन्न पत्रिकाओं एवं संग्रहों में प्रकाशन।

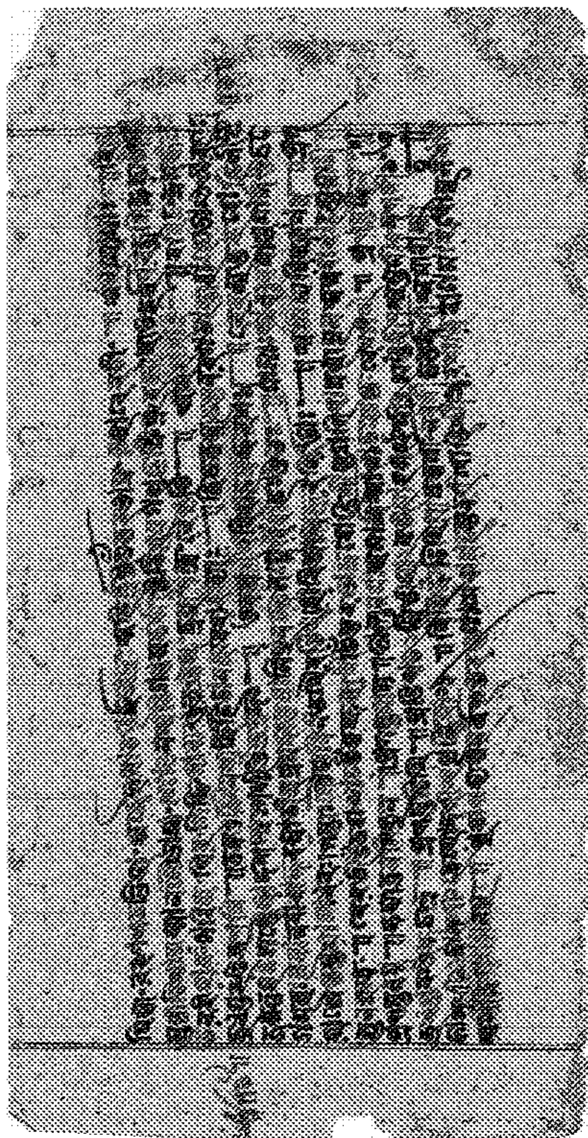
सम्पादन – (1) **अगस्त्य-संहिता** (2) **दुर्गासप्तशती** (3) म. म. परमेश्वर झा कृत **यक्षसमागमम्** (4) म. म. रुद्रधर कृत **पुष्पमाला** (5) म.म. पशुपतिकृत **व्यवहाररत्नावली** (6) म.म. रुचिपतिकृत **नाह्लिदत्तपञ्चविंशतिकाविवरणम्**।

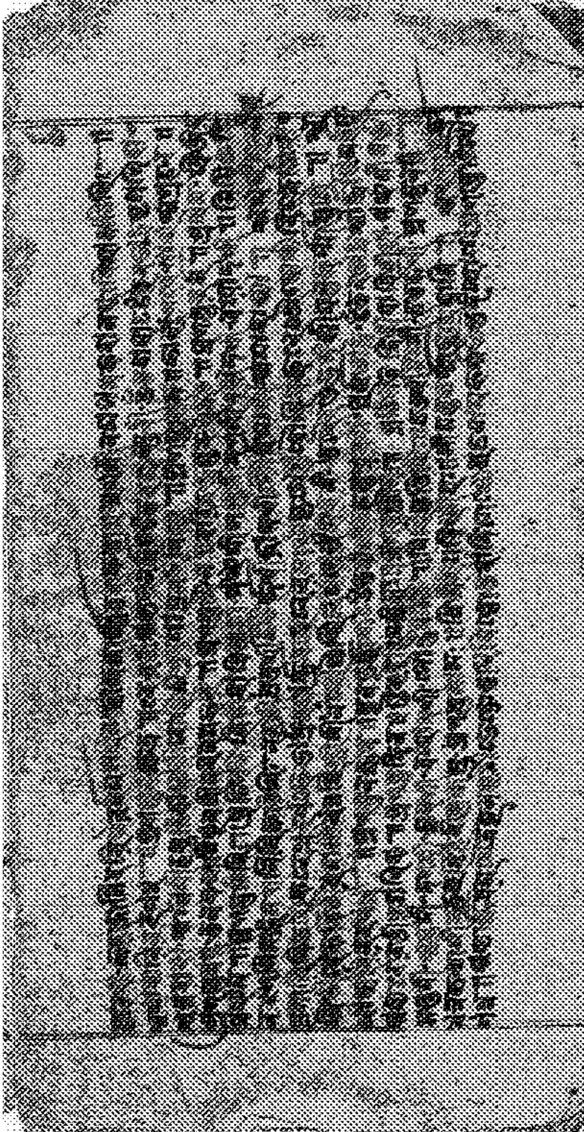
धर्मायण, महावीर मन्दिर, पटना से प्रकाशित धार्मिक एवं सांस्कृतिक शोधपरक पत्रिका।

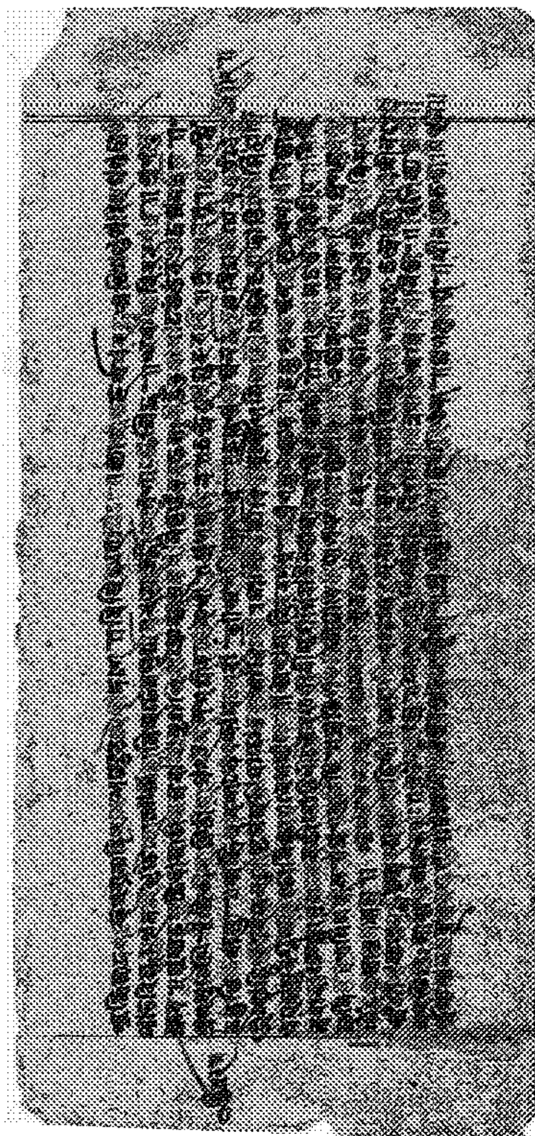
विशेष दक्षता – मिथिलाक्षर एवं देवनागरी की पाण्डुलिपियों से सम्पादन का विशेष अनुभव।

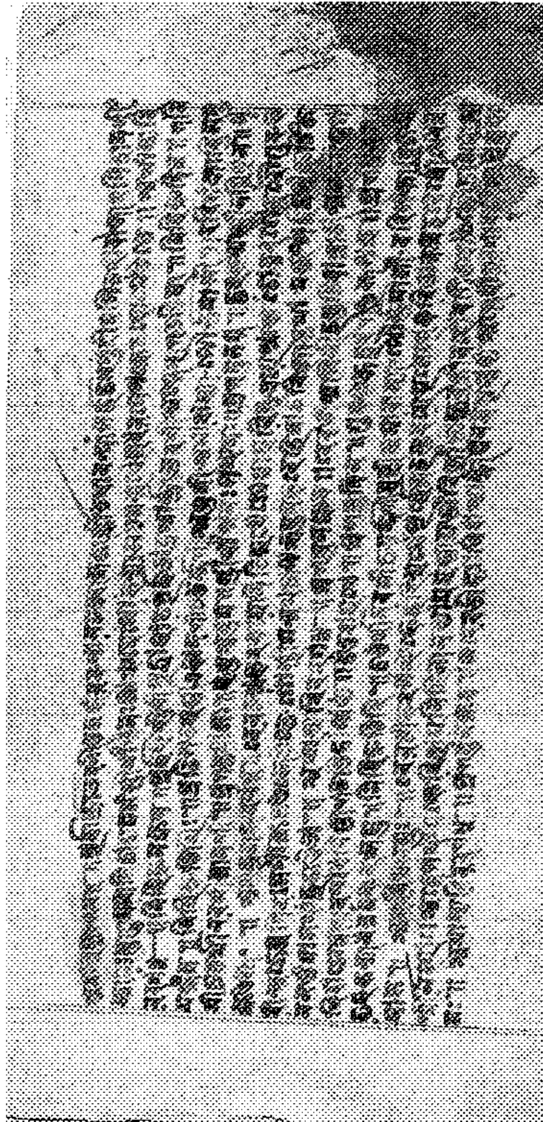
सम्प्रति – प्रकाशन एवं शोध प्रभारी, महावीर मन्दिर, पटना

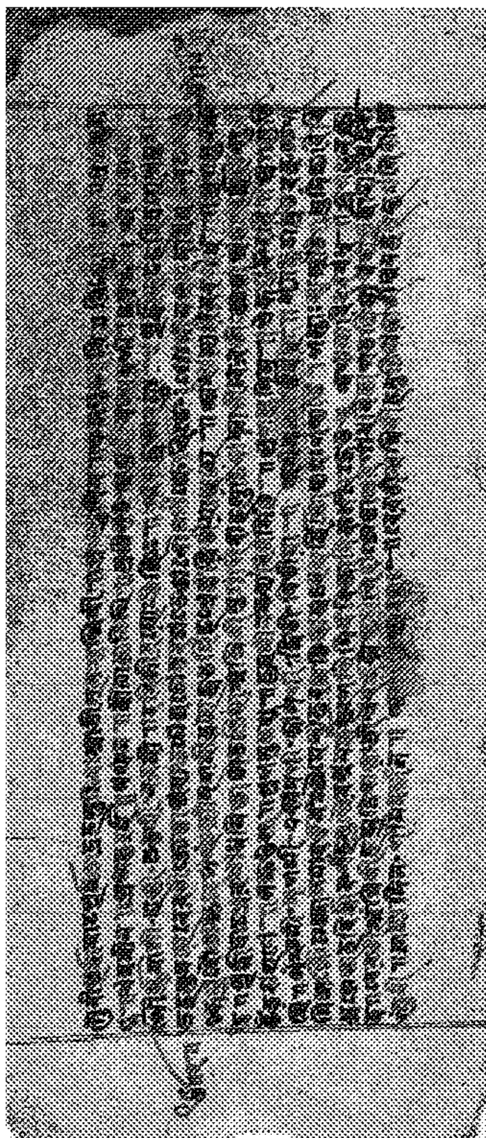


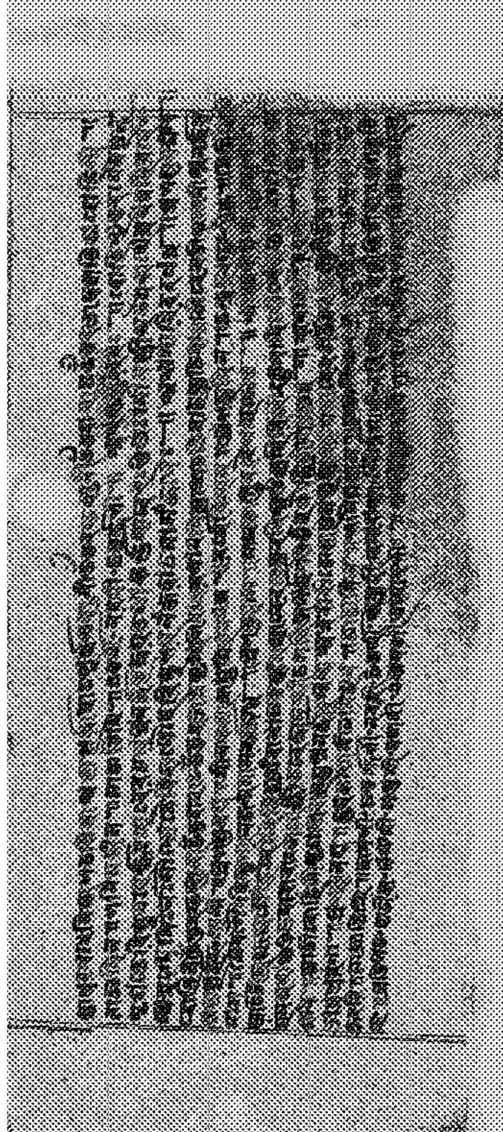


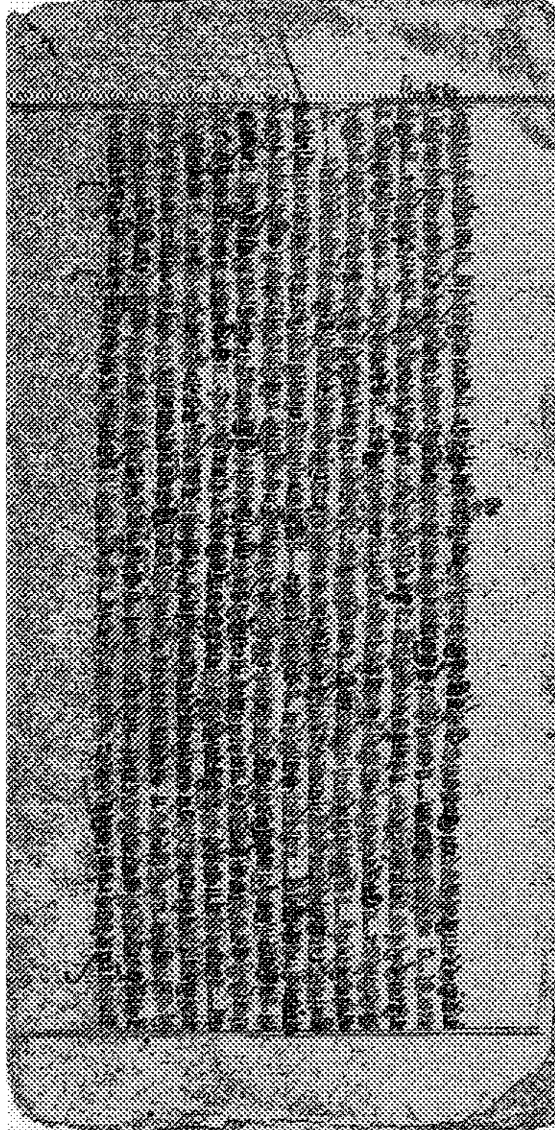


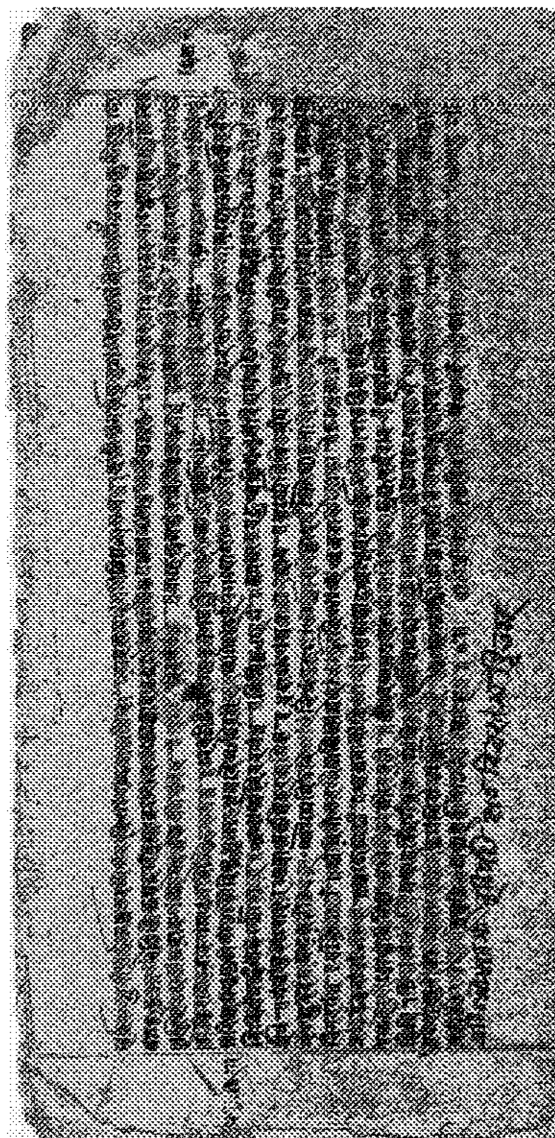












नाह्लिदत्तकृत पञ्चविंशतिका की रुचिपतिकृत टीका का विवेचनात्मक सम्पादन

किसी भी शुभ कार्य के लिए विहित काल का निर्धारण ज्यौतिष शास्त्र का प्रधान एवं सबसे प्राचीन विषय रहा है। ब्राह्मण-ग्रन्थों में भी यज्ञ के लिए विहित नक्षत्र, अयन एवं काल विशेष की गणना बतलायी गयी है। इसी काल के निर्धारण के लिए ज्यौतिषशास्त्र की प्रवृत्ति का भी उल्लेख भास्कराचार्य ने सिद्धान्त-शिरोमणि में ज्योतिष शास्त्र के वेदाङ्गत्व का प्रतिपादन करते हुए किया है –

वेदास्तावद् यज्ञकर्मप्रवृत्ताः
यज्ञा प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालवोधो यतः स्यात्
तद्वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्मात्।।

वाल्मीकि रामायण में भी विश्वामित्र राम एवं सीता के विवाह हेतु शुभ दिन का निर्धारण करते है –

मघा ह्यद्य महाबाहो तृतीय दिवसे प्रभो।
फल्गुन्यामुत्तरे राजँस्तस्मिन् बैवाहिकं कुरु।
रामलक्ष्मणयोरर्थे दानं कार्यं सुखोदयम्।।

(वा. रा. 1.71.24, गीता प्रेस)

न केवल वैदिक परम्परा में, अपितु बौद्धों की महायान शाखा

में भी शुभकाल में अनुष्ठित कर्म से ही सिद्धि मिलने की बात कही गयी है। आर्यमञ्जुश्रीमूलकल्प(750 ई. लगभग) के अष्टादश पटल में विहित तिथि, नक्षत्र एवं राशि(लग्न) का उल्लेख हुआ है। विहित नक्षत्र का उल्लेख करते हुए कहा गया है –

अश्विनी भरणीयुक्ता कृतिका मृगशिरास्तथा।
एतेष्वेव हि सर्वत्र नक्षत्रेष्वेव योजिताः।।
शान्तिकं कर्म निर्दिष्टं फलहेतुसमोदयम्।
रोहिण्यां साधयेदर्थी पुष्टिकामः सदाजपी।।
आर्द्रायां कारयेत् कर्म वश्याकर्षणहेतुभिः।
पुनर्वस्वोस्तथा पुष्ये साधयेद्धनसम्पदाम्।

इस प्रकार मूहूर्तशास्त्र ज्यौतिष का एक महत्त्वपूर्ण अंग है जिसका सम्बन्ध समाज में जनसामान्य से है। मिथिला में रचित 'नाह्नि दत्तपञ्चविंशतिका' नामक ग्रन्थ इसी मुहूर्त विषय से सम्बद्ध लघुकाय किन्तु महत्त्वपूर्ण रचना है, जिसमें गृहस्थों के लिए उपयोगी कार्यों के लिए शार्दूलविक्रीडित छन्द में केवल 24 श्लोकों में शुभ मुहूर्तों का विवेचन किया है।

यहाँ एक और महत्त्वपूर्ण विषय है कि नाह्निदत्त ने विवाह को ही पहला संस्कार क्यों माना है। यदि हम मानव जीवन को देखें तो गर्भाधान से जीवन का आरम्भ होता है। पारम्परिक रूप से भी षोडश संस्कार की सूची गर्भाधान से आरम्भ होती है –

गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च।
नामक्रिया निष्क्रमोऽन्नप्राशनं वपनक्रिया।
कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः।।
केशान्तः स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः।
चिताग्निसंग्रहश्चेति संस्काराः षोडश स्मृताः।।

व्यास–स्मृति– 1.13–14

इस मान्यता से हटकर नाह्निदत्त ने विवाह प्रकरण से इस ग्रन्थ का आरम्भ कर समाज के निर्माण में विवाह को आधार के रूप में प्रस्तुत किया है।

ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार का नाम

मैथिल नाह्निदत्तकृत पञ्चविशतिका के अनेक अन्य नाम उपलब्ध होते हैं– बालविवेकिनी, बालबोधिनी, व्यवहारशास्त्र, ज्योतिर्निर्णय, बालबोधदीपिका।

साथ ही इसके रचयिता के भी अनेक नाम विभिन्न पाण्डुलिपियों में मिलते हैं। कुछ पाण्डुलिपियों में तो श्रीपति को इसका कर्ता कहा गया है। यद्यपि ये नाम पाण्डुलिपि विवरणी बनाते समय लिपिवाचक के भ्रम के कारण प्रकाश में आ।ए हैं किन्तु अनेक विवरणियों में प्रकाशित हो जाने के कारण इनकी विवेचना यहाँ अपेक्षित है।

(क) कलकत्ता संस्कृत महाविद्यालय की पाण्डुलिपि सं. 66 में इस ग्रन्थ का नाम बालविवेकिनी है तथा इसके रचयिता के रूप में श्रीपति के नाम का उल्लेख है।

(ख) वी. राघवन् द्वारा लन्दन स्थित Wellcome Historical Medical Research Library, में संगृहीत पाण्डुलिपियों की जो सूची तैयार की गयी थी उसकी टाइप की गयी प्रति में पाण्डुलिपि सं. 21 में श्रीपति को इसका रचयिता माना गया है।

श्रीपति के अतिरिक्त अन्य अनेक नाम रचयिता के रूप में विभिन्न पाण्डुलिपियों में उपलब्ध होते हैं। मिथिलाक्षर की पाण्डुलिपियों की पुष्पिका में लिखित शब्द को भ्रमवशात् अन्यथा पढकर पाण्डुलिपि-विवरणी बनाने के क्रम में ऐसे नाम प्रकाश में आ गये हैं।

मातृदत्त – अनूप संस्कृत पुस्तकालय, परिग्रहण संख्या 1583।(सी. कुन्हन राजा एवं कोटचेरि माधवकृष्ण शर्मा, Catalouge of Anup Sanskrit Library)

शीलाह्लिदत्त – अनूप संस्कृत पुस्तकालय, परिग्रहण संख्या 4897।(सी. कुन्हन राजा एवं कोटचेरि माधवकृष्ण शर्मा, Catalouge of Anup Sanskrit Library)। यह नाम श्रीनाह्लिदत्त के स्थान पर भ्रमवशात् पढे जाने के कारण आ गया है।

नान्दिदत्त – बड़ौदा प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, 70A/1882/83। इसमें ग्रन्थ का नाम ज्योतिर्निर्णय कहा गया है। यहाँ नान्हिदत्त के बदले भ्रमवशात् पठित है।

मात्किदत्त – बड़ौदा प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, 9776 एवं 3388। इसमें ग्रन्थ का नाम ज्योतिर्निर्णय कहा गया है। यहाँ भी नान्हिदत्त मूल में होना चाहिए। वाचक के भ्रम से यह नाम आ गया है।

वह्निदत्त – जयपुर में 1766 ई. की पाण्डुलिपि में रचयिता के रूप में उल्लिखित। यहाँ नन्हिदत्त के बदले भ्रमवशात् वन्हिदत्त पढा गया फिर उसे पाठोद्धार कर वह्निदत्त मान लिया गया।

कीदत्त – बुह्लर को अहमदाबाद में खुशाल भट्ट के घर में 1802 ई. में लिपिबद्ध एक पाण्डुलिपि मिली थी, जिसका उल्लेख उन्होंने A Catalouge of Sanskrit Manuscripts contained in the Private Libraries of Gujrat Kathiabad Kacch and Khandesh में किया है। इसमें केवल 5 पत्र थे।

लाह्निदत्त – बड़ौदा प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, 426 /1895/98। यह पाण्डुलिपि 1813 ई. में लिपिबद्ध की गयी, जिसमें केवल 4 पत्र थे। यहाँ 'न' अक्षर को 'ल' पढ लेने का कारण भ्रम हुआ है।

लल्लदत्त – अनूप संस्कृत पुस्तकालय, परिग्रहण संख्या 4900।(सी. कुन्हन राजा एवं कोटचेरि माधवकृष्ण शर्मा, Catalouge of Anup Sanskrit Library) इस पाण्डुलिपि में कुल 32 पत्र हैं।

प्रीणाह्निदत्त – कलकत्ता संस्कृत महाविद्यालय की पाण्डुलिपि सं. 67। श्रीनाह्नि दत्त के बदले पढा गया है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में इस लघु ग्रन्थ की पाण्डुलिपि की उपलब्धता इसकी प्राचीनता और ख्याति का संकेत करती है। मिथिला

की परम्परा में इसके प्रणेता नाह्लिदत्त हैं जिन्हें श्रीपति का शिष्य माना गया है।

मङ्गलाचरण एवं पुष्पिका

अनन्त प्रसाद बनर्जी-शास्त्री द्वारा संपादित Descriptive Catalauge of Manusrcipt in Mithila के तृतीय खण्ड में एक पाण्डुलिपि का उल्लेख है, जो सकरी के निकटस्थ कन्हौली ग्राम में पण्डित श्रीनन्दन मिश्र के घर में मिली थी। इस लिपिकालविहीन पाण्डुलिपि में कुल 27 श्लोक हैं, जिनमें प्रथम श्लोक मङ्गलाचरण इस प्रकार है –

क्षीराधारसमाकारजाह्लवी यस्य मस्तके।
स मेऽस्तु शुभदः शम्भुः शिवालिङ्गनशर्मभाक्।।

अन्तिम श्लोक में रचनाकार ने अपना नामोल्लेख किया है। इसी में ग्रन्थ रचना का उद्देश्य तथा रचना-प्रक्रिया का भी विवरण है –

बालानां शुभकर्मशस्तसमयज्ञानं किलैकैकतः
श्लोकादस्त्विति संकलय्य निरमाच्छ्लोकाँश्चतुर्विंशतिम्।
पूर्वाचार्य कृतान् विलोक्य बहुशो ज्योतिर्निबन्धान् बहून्
नत्वा श्रीपतिपादपद्मयुगलं श्रीनाह्लिदत्तो द्विजः।।

मङ्गलाचरण के बाद रेवत्युत्तररोहिणीमृगमघा इत्यादि श्लोक इस पाण्डुलिपि में है। इस पाण्डुलिपि में यत्र-तत्र पादटिप्पणी भी उपलब्ध है।

नाह्लिदत्तपञ्चविशतिका के नाम से एक पाण्डुलिपि लालबाग,

दरभंगा के प. महीधर मिश्र के घर में उपलब्ध हुई थी। इसका लेखन काल शाके 1765 सन् 1251 साल है। इस मातृका में मङ्गलाचरण नहीं है। गणेशाय नम; के बाद सीधे रेवत्युत्तररोहिणी इत्यादि श्लोक से ग्रन्थ प्रारम्भ होता है।

रचनाकार का काल

बालबोधिनी अथवा नाह्निदत्तपञ्चविंशतिका के रचनाकार नाह्नि दत्त के काल के सम्बन्ध में बहुत ठोस प्रमाण नहीं उपलब्ध होता है। मिथिला की एक परम्परा पाण्डु अर्थात् परुआ मूल के लाह्नि प्रसिद्ध दामोदर को इस पञ्चविंशतिका की रचना का श्रेय देती रही है। ये लाह्नि प्रसिद्ध दामोदर पञ्जीकार रघुदेव के पितामह, पाञ्जिक हरिदेव के पिता तथा पाञ्जिक होरेश्वर के पुत्र थे। यदि प. म. महेश ठाकुर के समकालिक रघुदेव के पितामह को इसका प्रणेता माना जाये तो इस लाह्नि का समय 1500 ई. के आसपास माना जायेगा। परुआ मूल के लाह्नि प्रसिद्ध दामोदर महाकवि विद्यापति के दौहित्र तिसुरी मूल के महीपति के दौहित्र थे। *(पंजी-प्रबन्ध, सं. डा. योगनाथ झा, द्वितीय भाग, पृ. 347)*। इससे भी ये लाह्नि पर्याप्त परवर्ती सिद्ध होते हैं। किन्तु पञ्चविंशतिका के विवाह सम्बन्धी श्लोक का उल्लेख 1400 ई. के आसपासें म. म. पशुपति ने अपने ग्रन्थ 'व्यवहार-रत्नावली' में किया है, 1450 ई. के आसपास रुचिपति ने इसकी टीका लिखी है; अतः इतना निश्चित है कि ये 1400 ई. से पूर्व हुए थे।अतः पञ्जीकार रघुदेव के पितामह

को इसका कर्ता नहीं माना जा सकता है।

एक लान्हि करमहा मूल में भी म. म. हरिकेश के पुत्र हैं, जो 14वीं शती के सिद्ध होते हैं। इनकी वंशावली पञ्जी के अनुसार इस प्रकार है:-

सोनकरियाम (करमहा) सं. बीजी म. म. वंशधरः। वंशधर सुतो म. म. हरिब्रह्म, म. म. हरिकेश, म. म. (धूर्तराज) गोनू काः सकुरी सं. म. म. देयी दौ.। म. म. हरिकेश सुतो गोविन्द, नोने कौ, खण्ड. सं. नित्यानन्द दौ.। अपरा म. म. हरिकेश सुतो लक्ष्मीपति, नीलकंठौ, कुजौली सं. बाछे दौ.। अपरा म. म. हरिकेश सुता **लान्हि**, रुचिकर, हरिवंशाः लखनौर सक. सं. पनिहथ ढ़ोढ़े दौ.। (*पंजी-प्रबन्ध, सं. डा. योगनाथ झा, प्रथम भाग, पृ.127*)

इस लान्हि के सोदर भाई रुचिकर की पाँचवीं पीढ़ी पर दिवाकर हुए जो घोसौत मूल के रविकर के दुहितृदौहित्र थे। करमहा मूल में आगे की पंजी इस प्रकार है:

रुचिकर सुतो हरदत्त, नीतिकरौ, खण्ड. सं. विश्वनाथ दौ. । अपरा रुचिकर सुतो **गिरीश्वरः**, मनझी सं. ज्ञाननाम सीत दौ. । गिरीश्वर सुता **गंगेश्वर**, भवेश्वर, देवेश्वराः, लखनौर सक. सं. सर्वेश्वर दौ.। गंगेश्वर सुता नरसिंह, **श्रीवत्स**, केशवाः बेला. सक. सं. जीवेश्वर दौ.। अपरा गंगेश्वर सुता बाराह, श्रीधर,

माधव, रामाः, पतौ. खौआड़ सं. आंगू दौ.। महथौर अलय सं. गयशर्म्म दु.दौ.।। श्रीवत्स सुतो **दिवाकर प्र. बाछे**, शम्भु, हरयः (हरियः), दरि. सं. कोचे दौ.। गढ़ घोसौत सं. रविकर दु.दौ.।। (*पंजी–प्रबन्ध, सं. डा. योगनाथ झा, प्रथम भाग, पृ.127*)

साथ ही, घोसौत मूल के रविकर की पाँचवीं पीढ़ी पर म. म. देवनाथ ठाकुर हुए, जिन्होंने ल. स. 400 में मन्त्रकौमुदी की रचना की।

अब्दे लक्ष्मणसेनस्य वियच्छून्याब्धिलक्षिते।

अकरोत् कौमुदीमेतां देवनाथो जगद्धिताम्।।24।। (मन्त्रकौमुदी, मिथिला शोध संस्थान, 1960, पृ. 190)

अतः इनका काल निर्धारित है। दोनों वंशों की वंशावली की तुलना करने पर स्पष्ट है कि म. म. देवनाथ से छह पीढ़ी पूर्व में लान्हि थे। अतः इनका काल 1300 से 1350 ई. माना जाना चाहिए।

इस तथ्य को तालिका में इस प्रकार देखा जा सकता है –

करमहा मूल	**घोसौत मूल**
म. म. हरिकेश	
लान्हि, रुचिकर	
गिरीश्वर	रविकर
गंगेश्वर	महो. बुद्धिकर
श्रीवत्स	महो. केशव

दिवाकर म. म. गोविन्द

म. म. देवनाथ

(1475-1525 ई.)

इस प्रकार करमहा मूल के लान्हि को पंचविंशतिकाकार मानने में काल सम्बन्धी व्यतिक्रम नहीं होता है। साथ ही रुचिकर के एक पुत्र का नाम हरिदत्त उपलब्ध है। सम्भव है कि उन्होंने अपने पितृव्य लाह्नि दत्त से यह उपाधि ली हो।

इनके गुरु का नाम श्रीपति था। श्रीपति कृत जातकपद्धति को 14वीं शती की रचना माना जाता है। अतः यदि नाह्निदृतपंचविशतिका के अन्तिम श्लोक के श्रीपतिपादपद्मपधुपः में श्रीपति को गुरु माना जाए तो इस ग्रन्थ का काल 14वीं शती सिद्ध होता है।

प्रकाशन –

इस ग्रन्थ के अभीतक अनेक संस्करण निकल चुके हैं। मेरी जानकारी में इसके निम्नलिखित प्रकाशन हैं –

(1) एक प्रकाशन प. मुरलीधर झा के संपादन में बनारस से 1902 ई. में हुआ।

(2) हिन्दी एवं मैथिली अनुवाद के साथ दरभंगा से 1910 ई. में हुआ।

(3) भानुनाथ कृत व्यवहाररत्न के साथ परिशिष्ट में एक पत्र में राजप्रेस दरभंगा से हुआ।

(4) श्रीरामतेज पाण्डेय के संपादन में काशी से हुआ।

(5) प. देवचन्द्र झा के संपादन में हिन्दी अनुवाद सहित शिशुबोध के

साथ कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय से 1985 ई. में प्रकाशित हुआ।

प. देवचन्द्र झा ने इस प्रकाशन के 'दो शब्द' में लिखा है कि "शिशुबोध तथा नाह्निदत्तपञ्चविशतिका की जितनी भी टीकाएँ मुझे देखने को मिली सभी असंतोषजनक ही प्रतीत हुई।" पता नहीं उन्होंने किन टीकाओं की ओर संकेत किया है। जहाँतक मेरी जानकारी है इस ग्रन्थ की अभीतक कोई प्राचीन टीका प्रकाशित नहीं हुई है। उन संस्कृत टीकाओं से विलसित पाण्डुलिपियों की जानकारी हमें देश के विभिन्न भोगों से प्रकाशित पाण्डुलिपि-विवरणियों से मिलती है।

व्याख्याएँ

(1) नाह्निदत्तपञ्चविंशतिका की एक व्याख्या 'व्यवहारप्रकाशिका' की सूचना David Edwin Pingree की पुस्तक Census of the Exact Sciences in Sanskrit, Volume 3 से मिलती है। उक्त पुस्तक मे पृ.सं. 171 पर उन्होंने नाह्निदत्तपञ्चविशतिका की कुल 60 पाण्डुलिपियों की सूची दी है, जिनमें बम्बई से यू. देसाई द्वारा दी गयी सूचना के आधार पर ढुंढिराज कृत व्यवहारप्रकाशिका टीका के साथ दो पाण्डुलिपियों का विवरण है –

(क) इनमें से एक पाण्डुलिपि का लिपिकाल 1658 संवत् तदनुसार 1594 ई. है। इस खण्डित पाण्डुलिपि में पत्र संख्या 10 से 24 तक मात्र उपलब्ध है।

(ख) इसी टीका के साथ दूसरी पाण्डुलिपि संवत् 1818

तदनुसार 1761 ई. की है, जिसमें 32 पत्र हैं।

(2) कलकत्ता संस्कृत महाविद्यालय की पाण्डुलिपि-सूची में परिग्रहण संख्या. 66 में संवत् 1845 तदनुसार 1788 ई. की पाण्डुलिपि में इसे श्रीपतिकृत बालविवेकिनी नामक ग्रन्थ माना गया है तथा इसपर ईशानदत्त की एक टीका भी उपलब्ध है।

(3) एक अन्य टीका समन्वित मातृका की सूचना Descriptive Catalauge of Manusrcipt in Mithila से मिलती है। शाके 1766 सन् 1253 साल की लिखी यह मातृका तत्कालीन भागलपुर जिला के सुपौल के निकट बभनगामा में बाबू मार्कण्डेय मिश्र के घर उपलब्ध हुई थी। इस मातृका में अज्ञातकर्तृक व्याख्या भी है तथा विषय सूची भी दी हुई है, जो इस प्रकार है:-

विषयः। विवाहः। द्विरागमनम्। सीमन्तपुंसवने। नामकर्म। निष्क्रमणं। नवान्नभक्षणम्। नूतनवस्त्रपरिधानम्। अन्नप्राशनम्। चूडाकरणम्। विद्यारम्भः। उपनयनम्। समावर्तनम्। कर्णवेधः। वास्तु। पुष्करिणीप्रतिष्ठा। क्रयविक्रयौ। यात्रा। दिग्विरोधः।भूकम्पोल्कापातादिषु प्रशस्तविरुद्धनक्षत्राणि। माहेन्द्रमण्डलम्। गृहप्रवेशः। मङ्गलकार्ये निषिद्धयोगाः।दीक्षाग्रहणम्।

अज्ञातकर्तृक अनेक टीकाओं की सूचना विभिन्न पाण्डुलिपि-सूचियों से मिलती हैं, किन्तु इहें देखने के बाद ही इस विषय पर कुछ कहा जा सकता है।

(4) तत्कालीन भागलपुर जिला के ही सुकपुर के समीप बलहा ग्राम में

प. संतोषी झा के घर में प्राप्त एक पाण्डुलिपि में लक्ष्मीकरकृत टीका भी है। इसकी पुष्पिका में टीकाकार का नाम स्पष्ट है:- इति नाह्नि दत्तपञ्चविंशतिकाटीका श्रीलक्ष्मीधरकृता समाप्ता।

इस पाण्डुलिपि के आरम्भ में प्रथम श्लोक की टीका उक्त पाण्डुलिपि विवरणी में उद्धृत है। इससे व्याख्या की शैली संकेतित होती है। विवाहविषयक श्लोक की व्याख्या इस प्रकार है:-

रेवत्युत्तरेति। अस्यार्थः एतेषु नक्षत्रेषु लग्नेषु च विवाहः कर्म शुभः कल्याणकृद्भवति तथैव च एते वारास्तिथयश्च प्रशस्ताः भवन्ति केषु रोहिणी प्रशस्ता उत्तरे त्रिसामान्यश्रवणा उत्तरफल्गुन्युत्तराषाढोत्तरभाद्राणि रोहिणी प्रसिद्धा---।

पाण्डुलिपि का अन्त इस प्रकार है:-

एभिर्योगे शनिवारे अयोगो भवति। एते सर्वेऽयोगाः प्राग्यामतः प्रथमप्रहरादूर्ध्वं शोभनाः प्रशस्ताः भवन्ति। एतेषु प्रथमप्रहरं परित्यज्य कर्तव्यं अयोगेषु च सर्वेषु पूर्वयामं परित्यजेत्।

प्रस्तुत व्याख्या –

इसके व्याख्याकार रुचिपति हैं। इन्होंने मङ्गलाचरण में ग्रन्थकार का नाम नाह्निदत्त लिखा है तथा बालकों तथा सामान्य मन्दबुद्धिवालों को इस पंचविंशतिका का सम्यक् बोध कराने के लिए विवरण लिखे जाने की बात कही है।

प्रस्तुत पाण्डुलिपि का विवरण

ग्रन्थनाम – नाह्निदत्तपञ्चविंशतिका

आधार – हस्तनिर्मित कागज

आकार – 26 सेंटीमीटर X 10 सेंटीमीटर

लिखित स्थान – 21.5 सेंटीमीटर X 6.5 सेंटीमीटर

पत्रसंख्या – 5

पृष्ठसंख्या – 10

प्रतिपत्र पंक्तिसंख्या – 11-14

प्रति पंक्ति अक्षरसंख्या – 40-45

आरम्भ – श्रीगणेशाय नमः। श्रीमान् रुचिपतिः स्वेष्टदेवतापदपङ्कजम्।

अन्त – इति नाह्निदत्तविरचिता पञ्चविंशतिका समाप्ता।। शुभमस्तु।।

पुष्पिका के बाद अन्य लेख – इति खौआल सं. रुचिपतिकृतविवरणसहितम्। श्रीपिनाकनाथशर्मणः पुस्तकमदः।

पाण्डुलिपि में लिपिकार एवं लिपिकाल का उल्लेख नहीं है। देखने से यह 200 से 150 वर्ष प्राचीन प्रतीत होती है। सभी अक्षर सुस्पष्ट एवं अशुद्धि रहित है। एक स्थल पर भ्रमवशात् पुनरावृत्ति है। पत्र संख्या 4.ख पर लेखन के बाद स्याही गिर जाने से कुछ अंश अस्पष्ट है किन्तु कम्प्यूटर की सहायता से इसे पढ लिया गया है।

पुष्पिका के बाद अन्य लेख दूसरे व्यक्ति की लिखावट है। इसमें 'खौआल सं. रुचिपति' लिखा हुआ है किन्तु इस लेख की प्रामाणिकता संदिग्ध है। यह किसी आधुनिक व्यक्ति के द्वारा लिखा

गया है।इस पाण्डुलिपि में पं. पिनाकनाथ शर्मा का नाम है। ये मधुवनी जिला के झंझारपुर प्रखण्ड के लालगंज गाँव के निवासी थे। इनके पुत्र प. भवनाथ झा 'दीपक' संस्कृत के विद्वान् तथा मैथिली के प्रसिद्ध कवि हुए हैं। इनका देहावसान 1992 ई. में हुआ। मेरे ऊपर इनकी असीम कृपादृष्टि रही। मेरे पिता प. अमरनाथ झा तेजधारी-नन्दन संस्कृतोच्च विद्यालय में प्रधानाध्यापक थे। इसी विद्यालय में प. भवनाथ झा साहित्य के अध्यापक थे। इस कारण दोनों परिवार के बीच घनिष्ठता रही। बचपन में लेखन की ओर मेरी रुचि जगाने वाले शायद प्रथम व्यक्ति प. भवनाथ झा दीपक ही थे। उनके देहान्त होने के बाद अनेक अन्य पाण्डुलिपियों के साथ यह पाण्डुलिपि भी मेरे घर आयी।

व्याख्याकार रुचिपति

प्रकृत पाण्डुलिपि में पुष्पिकोत्तर लेख की प्रामाणिकता यद्यपि संदिग्ध है तथापि अन्य स्रोतों से जबतक कोई अन्य ठोस साक्ष्य उपलब्ध हो जाते हैं तबतक माना जा सकता है कि इसके टीकाकार खौआलवंशीय रुचिपति थे। अनर्घ्यराघव नाटक पर इनकी टीका प्रकाशित एवं चर्चित है जिसकी पुष्पिका के अनुसार ये भैरव सिंह (15वीं शती का मध्य भाग) के सभा-पण्डित थे। परम्परानुसार प्रसिद्ध धर्मशास्त्री इनके अग्रज थे तथा व्यवहार-प्रदीप के कर्ता आगमाचार्य हरपति इनके पुत्र थे। रुचिपति ने प्रबोध-चन्द्रोदय एवं उत्तररामचरित पर भी टीका का प्रणयन किया था।

रुचिपति के आसन्न पूर्ववर्ती म. म. पशुपति ने नाह्नि दत्तपञ्चविंशतिका के श्लोक को उद्धृत किया है अतः 15वीं शती के

रुचिपति के द्वारा टीका-निर्माण ऐतिहासिक विसंगति से भी रहित है। तथापि इसके टीकाकार का व्यक्तित्व विशेष शोध का विषय है।

व्याख्या का वैशिष्ट्य

नाह्निदत्तपञ्चविंशतिका मुहूर्तविषयक ग्रन्थ है अतः इसकी स्पष्टता अपेक्षित है। विधि-निषेध-कथन से शुभ मुहूर्त का निर्धारण इस ग्रन्थ का उद्देश्य है अतः प्रकृत व्याख्याकार ने नक्षत्र, तिथि, योग, लग्न, मास, पक्ष एवं अयन की तालिका देकर इसे अत्यन्त सरल बना दिया है। जिससे पाठक भाषा, वाक्य-विन्यास एवं अन्वय में उलझने से बच जाते हैं और उन्हें विधि-निषेध का सम्यक् बोध हो जाता है। ऐसे ग्रन्थों को समझने के लिए व्याख्या की वैज्ञानिक पद्धति है। आरम्भ में टीकाकार ने तिथि, नक्षत्र, साधिदेवत नक्षत्र, योग, वार, तारा-चन्द्रशुभत्व देकर इसे अधिक उपयोगी बना दिया है। परवर्ती काल में विवाह के लिए तीन लग्न से अतिरिक्त लग्न दनेवाले ज्योतिर्विदों के लिए तथा 'शुभतिथि', 'पर्व', 'अनध्याय' आदि पारिभाषिक शब्दों की प्रकारान्तर से व्याख्या करनेवालों के लिए यह विवरण 'इदमित्थम्' का नियमन करता है।

मूल-ग्रन्थ

नाह्लिदत्तकृता पञ्चविंशतिका

रुचिपतिकृतविवरणसहिता

श्रीमान् रुचिपतिः स्वेष्टदेवतापदपङ्कजम्।
प्रणिपत्य प्रयत्नेन व्याचष्टे प्राप्तनिर्णयः।।
संसारे व्यवहारार्थं नाह्लिदत्तैः समासतः।
आख्यातं गणितं प्राज्ञैः सप्रपञ्चं मयोच्यते।।
वाचोभिर्बालकैश्चार्थैस्सामान्यैर्मन्दबुद्धिभिः।
तदाख्यातमविज्ञेयमतो ज्ञेयं प्रपञ्चतः।।

तत्रादौ तिथयः

प्रतिपत् 1 द्वितीया 2 तृतीया 3 चतुर्थी 4 पञ्चमी 5 षष्ठी 6 सप्तमी 7 अष्टमी 8 नवमी 9 दशमी 10 एकादशी 11 द्वादशी 12 त्रयोदशी 13 चतुर्दशी 14 अमावास्या 15 पञ्चदशी 15

अथ नक्षत्रदेवताः

अश्वो यमोऽनलो ब्रह्मा शशी शर्वोऽदितिर्गुरुः।
सर्पः पिता भगश्चैव अर्यमा च दिवाकरः।।
त्वष्टा वातः कृशानुश्च मित्रश्चैव पुरन्दरः।
निर्ऋतिः सलिलञ्चैव विश्वेदेवो हरिस्तथा।।
वसवो वरुणश्चैव तथैव स्यादजैकपात्।
अहिर्बुध्न्यस्तथा पूषा क्रमान्नक्षत्रदेवताः।।

अथ साधिदैवतनक्षत्राणि

अश्व-अश्विनी यम-भरणी अनल-कृतिका ब्रह्मा-रोहिणी शशि-मृगशिरा शर्व-आर्द्रा अदिति-पुनर्व्वसू गुरु-पुष्य सर्प-आश्लेषा पितृ-मघा भग-पूर्वफल्गुनी अर्यमा-उत्तरफल्गुनी दिवाकर-हस्त त्वष्टा-चित्रा अनिल-स्वाती इन्द्र-विशाखा अग्नि-अनुराधा मित्र ज्येष्ठा शक्र-मूल निर्ऋति-पूर्वाषाढ विश्वेदेव-उत्तराषाढ हरि-श्रवण वसु-धनिष्ठा वरुण-शतभिषा अजैकपात्-पूर्व्वभाद्र अहिर्बुध्न-उत्तरभाद्र पूषा-रेवती।

अथ योगाः

विष्कम्भ प्रीति आयुष्मान् सौभाग्य शोभन अतिगण्ड सुकर्म्मा धृति शूल गण्ड वृद्धि ध्रुव व्याघात हर्षण वज्र सिद्धि व्यतीपात वरीयान् परिघ शिव सिद्धि साध्य शुभ शुक्ल ब्राह्म ऐन्द्र वैधृति।

अथ वाराः

रवि चन्द्र मङ्गल बुध गुरु शुक्र शनि।

तत्र शुद्धौ न स्युर्विहिता नक्षत्रताराद्याः।
द्विचतुष्षडष्टनवगतास्तारा ह्येता शुभावहाः।
जन्मतृषट्सप्तैकादशस्थः शशी शुभप्रदः।।

अथ प्रथमं विवाह प्रकरणम्।

रेवत्युत्तररोहिणीमृगमघामूलानुराधाकर
स्वातीषु प्रमदातुलामिथुनगे लग्ने विवाहः शुभः।
मासा फाल्गुनमाघमार्गशुचयो ज्येष्ठस्तथा माधवः
शस्ताः सौम्यदिनं तथैव तिथयो रिक्ता कुहू वर्जिताः।।1।।

अथास्य विवरणम्।। **प्रशस्त नक्षत्र-** रेवती उत्तराषाढ उत्तर फल्गुनी उत्तरभाद्र रोहिणी मृगशिरा मघा मूल अनुराधा हस्त स्वाती।।**प्रशस्त लग्न-** कन्या तुल मिथुन।।**प्रशस्त मास-** फाल्गुन माघ मार्गशीर्ष आषाढ ज्येष्ठ वैशाख।।**प्रशस्त दिन-** बुध गुरु शुक्र चन्द्र।।**प्रशस्त तिथि-** प्रतिपत्1 द्वितीया2 तृतीया 3 पञ्चमी5 सप्तमी7 अष्टमी8 दशमी 10 एकादशी 11 द्वादशी 12 त्रयोदशी 13 पूर्णिमा 15।

अथ द्विरागमनम्

पूषापुष्यपुनर्वसूत्तरमृगामैत्राश्वहस्तत्रयं
रोहिण्या श्रवणाद्विरागमविधौ मूलं धनिष्ठा तथा।
कुम्भाजालिरविश्च वर्षमसमं त्यक्त्वा कुजार्की तुला
कन्यामन्मथमीनयुक्तमकरालग्नानि यात्रातिथिः।।2।।

अथास्य विवरणम्।।**प्रशस्त नक्षत्र**- रेवती पुष्य पुनर्वसू उत्तरफल्गुनी उत्तराषाढ उत्तरभाद्र मृगशिरा अनुराधा अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती।।**प्रशस्त मास**- फाल्गुन वैशाख अग्रहण। **प्रशस्त लग्न**- तुला कन्या मिथुन मीन धनु मकर।।**प्रशस्त दिन**- रवि चन्द्र गुरु शुक्र।। **प्रशस्त वर्ष**- प्रथम तृतीय पञ्चम।।**प्रशस्त तिथि**- प्रतिपत् द्वितीया तृतीया पञ्चमी सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी।।**निषिद्ध दिन**- शनि मङ्गल।।**निषिद्ध तिथि**- नवमी चतुर्थी चतुर्दशी द्वादशी पौर्णमासी अमावस्या।।

पुंसवनसीमन्तोन्नयनमुहूर्ते

मूलादित्रितये करे श्रवणके भाद्रद्वयार्द्रात्रये
रेवत्याञ्च मृगे गुरौ दिनकरे भौमेऽप्यरिक्ता तिथौ।
द्वैतीयीव तृतीयमासि धनुषि स्त्रीमीनयोश्च स्थिरे
लग्ने पुंसवनं तथैव शुभदं सीमान्तकर्माष्टमे।।3।।

अथास्य विवरणम्।।**प्रशस्त नक्षत्र**- मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढ हस्त श्रवणा पूर्वभाद्र उत्तरभाद्र आर्द्रा पुनर्वसू पुष्य रेवती मृगशिरा।।**प्रशस्त दिन**- गुरु रवि मङ्गल।।**प्रशस्त तिथि** – प्रतिपत् द्वितीया तृतीया पञ्चमी षष्ठी सप्तमी दशमी द्वादशी त्रयोदशी पौर्णमासी।।**निषिद्ध तिथि** – चतुर्थी नवमी चतुर्दशी।। **प्रशस्त लग्न** – धनु कन्या मीन वृष सिंह वीछ कुम्भ।।**प्रशस्त मास**- द्वितीय तृतीय। सीमन्तकर्माष्टमे मासि।।

नामकर्म

पुष्यार्कत्रयमैत्रमूलमृगभे ज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरा-
दित्याख्येषु च नामकर्म शुभदं योगे प्रशस्ते तिथौ।
अह्ने द्वादशकेऽथवान्यदिवसे शस्ते तथैकादशे
गोसिंहालिघटेषु सूर्यप्रथमोर्ज्जीवे शशाङ्केषु च।।4।।

अथास्य विवरणम्।।**प्रशस्त नक्षत्र** – पुष्य हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा मृगशिरा ज्येष्ठा मूल धनिष्ठा उत्तरफल्गुनी उत्तराषाढ उत्तरभाद्र पूनर्व्वसू।।**प्रशस्त तिथि** – द्वितीया तृतीया पञ्चमी दशमी दशमी त्रयोदशी।।**प्रशस्त दिन**- चन्द्र बुध गुरु रवि।।**प्रशस्त लग्न**- वृष सिंह वृश्चिक कुम्भ।।**अह्नि** – द्वादशके एकादशे वा।।**निषिद्ध योग** – व्याघात हर्षण वज्र अतिगण्ड परिघ गण्ड व्यतीपात विष्कम्भ मूल वैधृति।।

निष्क्रमणमुहूर्त

हस्तः पुष्यपुनर्वसू हरियुगे मैत्रत्रयं रेवती
रोहिण्युत्तरफल्गुनीमृगयुताषाढोत्तराश्वानिलौ ।
मासौ तुर्यतृतीयकौ शनिकुजौ त्यक्त्वा च यात्रातिथिः
सिंहादित्रयकुम्भलग्नसहिता निष्कासने शस्यते।।5।।

अथास्य विवरणम्।।**प्रशस्त नक्षत्र**- हस्त पुष्य पुनर्व्वसू श्रवणा धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा मूल रेवती रोहिणी उत्तर फल्गुनी मृगशिरा उत्तराषाढ अश्विनी स्वाती।।**प्रशस्त मास** – चतुर्थ तृतीय।।**निषिद्ध दिन** – शनि मङ्गल।।**प्रशस्त तिथि**- प्रतिपत् द्वितीया तृतीया पञ्चमी

सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी।।**प्रशस्त लग्न** – सिंह कन्या तुल कुम्भ।

अथ नूतनवस्त्रपरिधाने नवान्नभक्षणे च

रेवत्यां करपञ्चकाश्विवसुभे वस्त्रं बुधादित्रये
पुंसां पुष्यपुवर्वसूत्तरयुता रोहिण्यपि श्रेयसी।
एतेष्वेव नवान्नमत्र तु मृगो विष्णोश्च भं शस्यते
चन्द्रार्कावपि मीनगोयुवतिभिः सार्द्धं तथा मन्मथः।।6।।

अथास्य विवरणम्।। **नूतन वस्त्रे**।।रेवती हस्त चित्रा स्वातीविशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा।।**विशिष्टं पुंसां**।। पुष्यपुनर्व्वसूत्रफल्गुनी उत्तराषाढ उत्तरभाद्र रोहिणी।। **प्रशस्त दिन** – वुध गुरु शुक्र।।**प्रशस्त लग्न**- मीन वृष कन्या मिथुन।।

अथान्नप्राशनम्

पूर्वाद्राभरणी भुजङ्गवरुणाँस्त्यक्त्वा कुजार्की तथा
नन्दां पर्व च सप्तमीमपि तथा रिक्तामपि द्वादशीम्।
स्यात्षष्टाष्टममासि चाद्यमशनं स्त्रीणां पुनः पञ्चमे
गोकन्याझषमन्मथेषु धवले पक्षे च योगे शुभः।।7।।

अथास्य विवरणम्।।**निषिद्ध नक्षत्र** – पूर्वफल्गुनी पूर्वाषाढ पूर्वभाद्र आर्द्रा भरणी आश्लेषा शतभिषा।।**निषिद्ध दिन** – शनि मङ्गल।।**निषिद्ध तिथि** – प्रतिपत् षष्ठी एकादशी चतुर्दशी अष्टमी अमावस्या पौर्णमासी। रविसंक्रान्ति सप्तमी चतुर्थी नवमी द्वादशी।।**प्रशस्त मास**- षष्ठ अष्टम। स्त्रीणां पुनः पञ्चमः।।**प्रशस्त** लग्न – वृष कन्या मीन

मिथुन।

मुण्डन(चूडाकरण)मुहूर्त

रेवत्यश्विकरत्रयेऽदितिमृगज्येष्टासु विष्णुत्रये
पुष्ये चोत्तरगे रवौ गुरुकवीन्दुज्ञेषु पक्षे सिते।
गोस्त्रीमन्मथचापकुम्भमकरे हित्वा च रिक्ता तथा
षष्ठीं पर्व च पक्षतिं जननभं मासञ्च चूडा शुभा।।8।।

अथास्य विवरणम्।। **प्रशस्त नक्षत्र-** रेवती अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती पुनर्व्वसू मृगशिरा। ज्येष्ठा श्रवणा धनिष्ठा शतभिषा पुष्य। उत्तरायणे।।**प्रशस्त दिन** – गुरु शुक्र बुध।। शुक्लपक्ष।। **प्रशस्त लग्न** – वृष कन्या धनु मकर कुम्भ।। **निषिद्ध तिथि** – चतुर्थी नवमी चतुर्दशी षष्ठी अमावस्या पौर्णमासी। रविसंक्रान्ति जन्ममास।

अथ विद्यारम्भः

रेवत्यां करपञ्चके हरियुगे पूर्वेषु हस्तत्रये
मूलेऽश्वे कविभानुषु हरेर्बोधे धनुर्मीनयोः।
अब्दे पञ्चमके विहाय निखिलानध्यायषष्टीयुतां
रिक्तां भाष्करजीवयोरपि तथा शुद्धौ च विद्योत्तमः।।9।।

अथास्य विवरणम्। **प्रशस्त नक्षत्र** – रेवती मृगशिरा आर्द्रा पुनर्व्वसू पुष्य आश्लेषा श्रवणा धनिष्ठा पूर्वफाल्गुनी पूर्वाषाढ पूर्वभाद्र हस्त चित्रा स्वाती मूल अश्विनी।। **प्रशस्त दिन** – शुक्र गुरु रवि।। विष्णोरुत्थाने।**प्रशस्त लग्न** – धनु मीन।। **प्रशस्त वर्ष** – पञ्चम।। **त्याज्यतिथि** – प्रतिपत् अष्टमी त्रयोदशी चतुर्दशी अमावस्या षष्ठी चतुर्थी

नवमी।।रविजीवयोः शुद्धिः।।

अथ व्रतारम्भः

पूर्वाषाढहरित्रयेऽश्विमृगभे हस्तत्रये रेवती
ज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौ च पक्षे सिते।
गोमीनप्रमदाधनुर्वनवरे शुक्रे गुरौ भास्करे
पञ्चम्यां दशमीत्रये व्रतमिह श्रेष्टं द्वितीयाद्वये।।10।।

अथास्य विवरणम्। **प्रशस्त नक्षत्र** – पूर्वाषाढ श्रवणा धनिष्ठा शतभिषा अश्विनी मृगशिरा हस्त चित्रा स्वाती रेवती ज्येष्ठा पुष्य पूर्वफल्गुनी। उत्तरायणे। **पक्ष** – शुक्ल।।**प्रशस्त लग्न** – वृष मीन कन्या धनु सिंह।।**प्रशस्त दिन** – शुक्र गुरु रवि।। **प्रशस्त तिथि** – पञ्चमी दशमी एकादशी द्वादशी द्वितीया तृतीया।।

समावर्तनधनुर्विद्यारम्भप्रायश्चित्तदिव्यशपथमुहूर्त –

स्याच्चूडाव्रतबन्धने शनिकुजौ त्यक्त्वा समावर्तनं
भौमेऽप्युत्तरकृतिकासु च धनुर्विद्योद्यमः शस्यते।
शस्ताः स्युस्त्वभिशस्तदिव्यविधिषु ज्येष्टा हरिर्वारुणं
हस्तश्चैव पुनर्वसुः शनिकुजौ रिक्तादिकञ्च त्यजेत्।।11।।

अथास्य विवरणम्।**प्रशस्त नक्षत्र** – रेवती अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती पुनर्व्वसू मृगशिरा ज्येष्ठा श्रवणा धनिष्ठा शतभिषा पुष्य पूर्वाषाढ पूर्वफल्गुनी।। **त्याज्य दिन** – शनि मङ्गल।।**त्याज्य तिथि** – चतुर्थी नवमी चतुर्दशी।।

अथ कर्णवेधः

रोहिण्युत्तरमैत्रमूलमृगभे विष्णुत्रयेऽर्कत्रये
रेवत्यश्विपुनर्व्वसुद्वयभगे कर्णस्य वेधः शुभः।
चापस्त्रीघटमन्मथेषु झषभे वर्षेऽप्ययुग्मे दिने
सौम्ये चैत्रिकपौषविष्णुशयनं त्यक्त्वा च मासं जनेः।।12।।

अथास्य विवरणम्। **प्रशस्त नक्षत्र-** रोहिणी उत्तरफल्गुनी उत्तराषाढ उत्तरभाद्र मृगशिरा श्रवणा धनिष्ठा शतभिषा हस्त चित्रा स्वाती रेवती अश्विनी पुनर्व्वसू पुष्य पूर्वफल्गुनी। **प्रशस्त लग्न-** मीन कन्या कुम्भ मिथुन धनु। वर्षे विषमे। **प्रशस्त दिन-** चन्द्र बुध गुरु शुक्र। **निषिद्ध मास-** चैत्रपौषविष्णुशयनजन्ममासवर्ज्येषु। **प्रशस्त मास-** माघ फाल्गुन वैशाख ज्येष्ठ।

कृषिकर्मच्छेदने

स्वातीब्रह्ममृगौ करोऽदितियुगं राधाचतुष्कं मघा
रेवत्युत्तरविष्णुभं कृषिविधौ छेदादिवापे शुभम्।
गोकन्याझषमन्मथाश्च शुभदाः वाराः कुजार्कीतरे
रिक्ता द्वादशिका च पर्व न शुभं षष्ठीद्वितीयायुतम्।।13।।

अथास्य विवरणम्। **प्रशस्त नक्षत्र-** स्वाती रोहिणी मृगशिरा हस्त पुनर्व्वसू पुष्य अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ मघा रेवती उत्तरफल्गुनी उत्तराषाढ उत्तरभाद्र श्रवणा। **प्रशस्त लग्न-** वृष कन्या मीन मिथुन। **त्याज्य दिन-** द्वादशी चतुर्दशी नवमी चतुर्थी अष्टमी अमावस्या पौर्णमासी

रविसङ्क्रान्ति षष्ठी द्वितीया। **प्रशस्त तिथि**- प्रतिपत् तृतीया पञ्चमी सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी।

वास्तुकर्मणि

रोहिण्यां श्रवणत्रयेऽदितियुगे हस्तत्रये मूलभे
रेवत्युत्तरफल्गुनीन्दुतुरगे मैत्रोत्तराषाढयोः।
शस्ते वास्तु कुजार्किवर्जितदिने गोकुम्भसिंहे झषे
कन्यायां मिथुने नभः शुचिसहोराधोर्जके फाल्गुने।।14।।

अथास्य विवरणम्। **प्रशस्त नक्षत्र**- रोहिणी श्रवणा धनिष्ठा शतभिषा पुनर्व्वसू पुष्य हस्त-------- स्वाती मूल रेवती उत्तरफल्गुनी मृगशिरा आश्लेषा अनुराधा उत्तराषाढ। **त्याज्य** दिन- मङ्गल रवि। प्रशस्त दिन- चन्द्र बुध शुक्र------। प्रशस्त लग्न- वृष कुम्भ सिंह कन्या मीन मिथुन। प्रशस्त मास- श्रावण आषाढ वैशाख कार्तिक फाल्गुन।

अथ वेश्मप्रवेशमुहूर्त

आश्लेषां च विशाखया सह मघां पूर्वात्रयं याम्यभं
रिक्तां सूर्यकुजौ विहाय च कुहूं वेश्मप्रवेशः शुभः।
गोसिंहालिघटास्तथैव धवलः पक्षः प्रशस्तोऽधिकः
कन्या मन्मथमीनचापसहिता मासास्तु वास्तूदिताः।।15।।

अथास्य विवरणम्।**त्याज्य नक्षत्र**- आश्लेषा विशाखा मघा पूर्वफल्गुनी पूर्वाषाढ पूर्वभाद्र भरणी। **त्याज्य तिथि**- चतुर्थी नवमी

चतुर्दशी अमावस्या। **त्याज्य दिन**- रवि मङ्गल। **प्रशस्त दिन**- चन्द्र बुध गुरु शुक्र।**प्रशस्त नक्षत्र**- रेवती धनिष्ठा शतभिषा आर्द्रा उत्तरफल्गुनी उत्तराषाढ उत्तरभाद्र। **प्रशस्त लग्न-** सिंह बीछु (वृश्चिक) कुम्भ मकर। शुक्लपक्ष। **प्रशस्त मास**- श्रावण वैशाख कार्तिक फाल्गुन।

अथतडागगृहप्रतिष्ठा

गोसिंहालिघटेषु चोत्तरगते भानौ बुधादित्रये
सोमेऽर्के च शुभस्तडागविविधारामप्रतिष्ठाविधिः।
श्लेषार्द्रे भरणीद्वयं शतभिषायुक्तां विशाखां कुहूं
रिक्तां पक्षतिमष्टमीं परिहरेत् षष्टीमपि द्वादशीम्।।16।।

अथास्य विवरणम्। **प्रशस्त लग्न**- वृष सिंह बीछु कुम्भ। उत्तरायणे। **प्रशस्त दिन-** बुध गुरु शुक्र रवि। शुद्धौ च। **त्याज्य नक्षत्र**- अश्लेषा भरणी कृतिका शतभिषा विशाखा। **त्याज्य तिथि**- अमावस्या चतुर्थी चतुर्दशी प्रतिपत् अष्टमी षष्ठी द्वादशी। **प्रशस्त तिथि-** द्वितीया तृतीया पञ्चमी सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी पौर्णमासी।

अथ क्रयविक्रयभैषज्यभक्षणे च

मूलाश्वीन्दु करोत्तरश्रवणकैर्युक्तं च भाद्रद्वयं
पूषापुष्यसमीरमैत्रसहितं शस्तं क्रये विक्रये।
भैषज्येऽदितिपुष्यमूलवसवो मैत्राश्विशक्रा हरिः
पूषास्वातियुतोऽत्र चैव शुभदश्चन्द्रः कविर्वाक्पतिः।।17।।

अथास्य विवरणम्। **प्रशस्त नक्षत्र-** मूल अश्विनी मृगशिरा हस्त उत्तरफल्गुनी उत्तराषाढ श्रवणा पूर्वभाद्र रेवती पुष्य स्वाती अनुराधा। **भैषज्यभक्षणे-** पुनर्व्वसू मूल पुष्य धनिष्ठा अनुराधा अश्विनी ज्येष्ठा श्रवणा रेवती स्वाती। **प्रशस्त दिन-** चन्द्र गुरु शुक्र।

यात्रामुहूर्त

सार्पोर्द्रोत्तरकृत्तिका यममघास्त्याज्या विशाखा युताः
शस्ताः पुष्यकरादितीन्दुश्रवणा मैत्रत्रयं रेवती।
भान्यन्यानि तु मध्यमानि गमने षष्ठीयुता द्वादशी
रिक्तां पर्व च वर्जयेज्झषतुलस्त्रीमन्मथाः शोभनाः।।18।।

अथास्य विवरणम्। **त्याज्य नक्षत्र-** आश्लेषा आर्द्रा उत्तरफल्गुनी उत्तराषाढ उत्तरभाद्र कृतिका भरणी मघा विशाखा। **प्रशस्त नक्षत्र-** पुष्यहस्त पुनर्व्वसू मृगशिरा अश्विनी अनुराधा ज्येष्ठा मूल रेवती। **मध्यम नक्षत्र-** रोहिणी पूर्वफल्गुनी चित्रा स्वाती पूर्व्वाषाढ श्रवणा धनिष्ठा शतभिषा पूर्वभाद्र। **त्याज्य तिथि-** षष्ठी द्वादशी चतुर्दशी चतुर्थी नवमी अष्टमी अमावस्या पौर्णमासी रविसङ्क्रान्ति। **प्रशस्ततिथि-** द्वितीया तृतीया पञ्चमी सप्तमी दशमी एकादशी त्रयोदशी। **प्रशस्त लग्न-** मीन तुल कन्या मिथुन।

वारनक्षत्रशूल

पूर्वाद्याः शनिचन्द्रगीष्पतिबुधादित्येषु शुक्रे कुजे
नो गम्याः क्रमशस्तथा परिहरेत् प्राचीं च मूलेन्द्रयोः।

याम्यां च श्रवणादिषट्सु विधिभे पुष्ये प्रतीचीं त्यजेत्
सौम्यां चोत्रफाल्गुनीष्वपि तथा हस्ते न यायाद् बुधः।।19

अथास्य विवरणम्। **पूर्व दिशि निषिद्ध-** शनि मूल ज्येष्ठा। **आग्नेय्यां निषिद्धाः-** चन्द्र श्रवणा धनिष्ठा शतभिषा पूर्वभाद्र उत्तरभाद्र रेवती। **दक्षिणदिशि निषिद्धाः-** गुरु श्रवणा धनिष्ठा शतभिषा पूर्वभाद्र उत्तरभाद्र रेवती। **नैर्ऋत्यां निषिद्धाः-** बुध रोहिणी पुष्य। **पश्चिमदिशि निषिद्धाः-** रवि रोहिणी पुष्य। **वायव्यां निषिद्धाः-** शुक्र उत्तरफल्गुनी हस्त। **उत्तरदिशि निषिद्धाः-** मङ्गल उत्तरफल्गुनी हस्त। **ऐशान्यां निषिद्धाः –** शनि मूल ज्येष्ठा।

अथ मण्डलजिज्ञासा

आग्नेयं भगपूर्वभाद्रभरणी पुष्या विशाखा मघा
वह्निश्चात्र फलं तु मन्दमवनी कल्पग्रहोल्कादिषु।
वायव्यं पवनादितीन्दुतुरगाश्चित्रोत्तरा फाल्गुनी
हस्तश्चेति किलोदितं फलमिहाप्यत्यन्तमन्दं विदुः।।20।।

अथास्य विवरणम्। **आग्नेय्यमण्डलमिति मन्दफलम्।** पूर्वफल्गुनी पूर्वभाद्र भरणी पुष्य विशाखा मघा कृतिका। **वायव्यमण्डलमिति मन्दफलम्।** स्वाती पुनर्व्वसू मृगशिरा अश्विनी चित्ता उत्तरफल्गुनी हस्त।

माहेन्द्रं श्रवणाभिजिद्वसुयुतं ब्रह्मानुराधायुतो
ज्येष्ठाषाढयुतोऽपि वैफलमिहाप्यत्यन्तशस्तं भवेत्।
रेवत्युत्तरमूलभाद्रवरुणश्लेषास्तथार्द्रा भवेत्
पूर्वाषाढयुतं च वारुणमिह श्रेष्ठं फलं मण्डले।।21।।

अथास्य विवरणम्। **माहेन्द्रमण्डलमिति शुभफलम्।** श्रवणा

अभिजित् धनिष्ठा रोहिणी अनुराधा ज्येष्ठा उत्तराषाढ। **वारुणमण्डलमिति शुभफलम्**। रेवती उत्तरभाद्र मूल शतभिषा श्लेषा आर्द्रा पूर्वाषाढ।

अथ निषिद्धयोगाः

व्याघातः कुलिशातिगण्डपरिघागण्डव्यतीपातकौ
विष्कुम्भः सह शूलवैधृतिवरीयानप्यथो हर्षणः।
योगाः कर्मसु निन्दिताः परिहरेद् गण्डान्तकालोदयो
भद्रार्धप्रहरादिकञ्च निखिलं माङ्गल्यकर्मोद्यमे।।22।।

अथास्य विवरणम्।**निषिद्ध योग**। व्याघात वज्र अतिगण्ड परिघ गण्ड व्यतीपात मूल विष्कम्भ वैधृति वरीयान् हर्षण। गण्डान्तकालोदय भद्रा अर्द्धप्रहर कुलिक।

रव्यादिवारेषु त्याज्यनक्षत्र

सूर्येऽश्वित्रितयं मघार्द्रसहितं त्याज्यं विशाखात्रयं
चन्द्रे पुष्यविशाखशम्भुपवनाषाढत्रयं चित्रया।
भौमे मैत्रविशाखविश्वभुजगाश्चार्द्राधनिष्टात्रयं
सौम्ये मूलशिवार्यमैन्द्रवसवश्चाशो यमो रेवती।।23।।

अथास्य विवरणम्।**रवौ त्याज्यम्**। अश्विनी भरणी कृतिका मघा आर्द्रा विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा। **चन्द्रे त्याज्यम्**। पुष्य विशाखा आर्द्रा स्वाती पूर्वाषाढ चित्रा। **कुजे त्याज्यम्-** अनुराधा विशाखा उत्तराषाढ आश्लेषा आर्द्रा धनिष्ठा शतभिषा पूर्वभाद्र। **बुधे त्याज्यम्-** मूल आर्द्रा उत्तरफल्गुनी ज्येष्ठा धनिष्ठा अश्विनी भरणी रेवती।

जीवे मूलयमार्यमानिलमघाब्राह्मत्रयं वारुणं
पूषा चाथ कवौ शिवेन्द्रपवनाः पुष्यत्रयं रोहिणी।
चित्रा चाथ शनौ मघाहरियुगं पूर्वार्यमादित्रयं
पूर्वाषाढयुगं च मूलमिह तु प्राग्यामतः शोभनम्।।24।।

अथास्य विवरणम्।**गुरौ** मूल भरणी उत्तरफल्गुनी स्वाती मघा रोहिणी मृगशिरा आर्द्रा रेवती। **शुक्रे** आर्द्रा ज्येष्ठा स्वाती पुष्य आश्लेषा मघा रेहिणी चित्रा। **शनौ** श्रवणा मघा घनिष्ठा रेवती उत्तरफल्गुनी हस्त चित्रा पुष्य पूर्वाषाढ उत्तराषाढ मूल।

इति श्रीनाह्लिदत्तविरचिता पञ्चविंशतिका समाप्तिमगमत्।

पुष्पिकोत्तरलेख

इतिखौआलसं. रुचिपतिकृतविवरणसहितम्।

श्रीपिनाकनाथशर्मणः पुस्तकमदः।

इस पाण्डुलिपि में नाह्लिदत्तपञ्चविंशतिका के मूल में उपलब्ध यह अन्तिम श्लोक नहीं है-

बालानां शुभकर्मशस्तसमयज्ञानं किलैकैकतः
श्लोकदस्त्विति संकलय्य मनसा श्लोकाँश्चतुर्विंशतिम्।
पूर्वाचार्यकृतान् विलोक्य बहुशो ज्योतिर्निबन्धान् बहूँ-
श्चक्रे श्रीपतिपादपद्ममधुपः श्रीनाह्लिदत्तो द्विजः।।25।।

***